Content

विषयानुक्रमाणिका

		पृ. सं.
	प्राकथ्थन	1
❖	राजस्थान के विभिन्न माण्ड गायन क्षेत्रों के विषय में साधारण जानकारी।	2 – 4
	प्रथम अध्याय	8 – 44
❖	लोकसंगीत।	8 – 9
❖	लोकसंगीत का उद्‌भव एवं विकास।	10 – 11
❖	राजस्थान के लोकगीत पर क्षेत्रीय, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक प्रभाव।	12 – 21
❖	राजस्थान का लोकसंगीत।	22 – 23
❖	लोकगीतों का वर्गीकरण।	24 – 44
	द्वितीय अध्याय	45 – 80
❖	शास्त्रीय व उपशास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में माण्ड व उसकी सौन्दर्यात्मक्ता।	45 – 70
❖	शास्त्रीय संगीत - ध्रुवपद, धमार ख्याल आदि विभिन्न अंग।	71 – 75
❖	उपशास्त्रीय संगीत - ठुमरी, टप्पा, कजरी, होरी, चैती, "राजस्थानी माण्ड" माण्ड राग स्वरुप, स्वर लगाव, कण, मुरकी, हलक, दोहा, माण्ड में लयकारी का स्थान.	76 – 80

तृतीय अध्याय 81 – 114

❖ राजस्थानी लोक संगीत "माण्ड"। माण्ड का विकास। 81 – 89

1. राजस्थानी लोक संगीत और ताल तथा माण्ड गायकी में ताल का स्थान। 90 – 91

2. माण्ड गायनशैली में प्रयुक्त होने वाले वाद्य। 92 – 95

❖ माण्ड गायन की विभिन्न जातियां व क्षेत्रीय प्रभाव एवं आकार प्रकार। 96 – 98

1. राजस्थान में माण्डशैली का गायन करने वाली कुछ व्यवसायिक जातियाँ। 98 – 113

2. राजस्थान की व्यवसायिक जातियाँ। 113 – 114

चतुर्थ अध्याय 115 – 134

❖ माण्ड गायकी परम्परा। 115 – 124

❖ जन जीवन पर प्रभाव। 125 – 128

❖ वर्तमान माण्ड गायकी का महत्व 129 – 134

पंचम अध्याय 135 – 161

❖ कुछ विशेष माण्ड गीतों की स्वरलिपी। 135 – 151

❖ प्रचलित एवं अप्रचलित माण्ड 152 – 161

षष्ठम अध्याय 162 – 199

❖ माण्ड गायिकाओं का सारांश में जीवन विवरण। 163 – 167

❖ वर्तमान माण्ड कलाकारों का साक्षात्कार 168 – 188

❖ आडियो रिकार्डिंग्स (आकाशवाणी विवरण) 189 – 199

❖ **उपसहांर** 200 – 210